परिशिष्ट क्र. 1

डॉ. देवेश ठाकुर जी से एक साक्षात्कार

परिशिष्ठ क्र. 1

डॉ. देवेश ठाकुर जी से एक साक्षात्कार

स्थान- B-23,
हिमालय पर्वतीय को ऑप सोसायटी,
घाटकोपर (पश्चिम)
मुबई।

तिथि- 6 जुन, 2004

शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम्.फिल. उपाधि के लिए "देवेश ठाकुर के 'गुरुकुल' और 'शिखर पुरुष' उपन्यासों मे चित्रित शिक्षा-व्यवस्था" इस विषय पर शोधकार्य कर रही हूँ। आलोच्य उपन्यास के संदर्भ में मेरे मन में पहले से ही कुछ प्रश्न निर्माण हुए थे। अत: इस संदर्भ में मैंने अपने शोधनिर्देशक जी से चर्चा की और उन्होंने मुझे बताया कि, इन जिज्ञासाओं का समाधान देवेश जी से प्रत्यक्ष मिलकर एवं पत्राचार द्वारा हो सकता है।

विषय से संबंधित जिज्ञासाओं की जानकारी पाने के लिए प्रश्नावली बनायी। और देवेश जी को पूर्वसूचना देकर मैं इतवार दिनांक 6 जून 2004, को सुबह 9.30 बजे हिमालय पर्वतीय को-ऑप हाउसिंग सोसायटी, घाटकोपर (पश्चिम), मुंबई स्थित उनके निवास स्थान पर पहुँची।

मैं अंदर जाकर उनसे मिलने के लिए आतुर हो रही थी। फिर भी मेरे मन में कहीं संकोच था और थोडी - सी घबराहट भी। क्योंकि इतने बडे लेखक के साथ मैं किस प्रकार वार्तालाप कर पाऊँगी ? औपचारिक परिचय के बाद देवेश जी ने मेरा आत्मीयतापूर्ण स्वागत किया तथा उनकी अपनत्वभरी मुस्कान से मन को आश्वस्ति मिली। उन्होंने मुझे चाय-पान का आग्रह किया तथा अपना घर दिखाया और 'शिखर-पुरुष' उपन्यास की कापी भेंट के रुप में दी, उससे विश्वास नहीं हो रहा था कि मैं किसी महान साहित्यिक के साथ हूँ।

मैंने साक्षात्कार के लिए उनसे प्रार्थना की । कोई भी काम जल्दी-से-जल्दी निपटना उनकी प्रवृत्ति है । उसी की प्रचिती मुझे आज हुई । उन्होंने-जल्द ही मुझ से कहा,"तुम्हारी जो भी जिज्ञासाएँ हो अभी पूछो । हम आराम से बातचीत करेंगे ।" मेरे शोधविषय से संबंधित कुछ बातें होने के बाद धीरे-धीरे साक्षात्कार के लिए वातावरण बनने लगा । मैंने क्रमश: अपनी जिज्ञासाएँ प्रश्नों के रुप में उनके सम्मुख प्रस्तुत कर दी ।

संक्षेप में उनके साथ हुए साक्षात्कार का ब्यौरा इसप्रकार है -

1. आपके जीवन में अनेक उतार-चढाव आए । इनसे आपको लेखक बनने में कितनी सहायता मिली ?
   - ➢ सच पूछिए तो जीवन के संघर्षों ने ही मुझे लेखक बनाया । मैं ऐसा मानता हूँ कि यदि ये संघर्ष नहीं होते तो मेरे लेखन में वह धार नहीं होती जो शायद मेरे लेखन की विशिष्ट पहचान बन गई है ।
2. आप लेखन में अनुभव की प्रामाणिकता को पर्याप्त महत्त्व देते हैं ?
   - ➢ मेरी दृष्टि में ईमानदार लेखन के लिए यह अनिवार्यता है और मैंने अपने हर प्रकार के लेखन में इसे महत्त्व दिया है ।
3. आपने कहानी, एकांकी, शोध, समीक्षा, निबंध, संपादन आदि कई क्षेत्रों मे कार्य किया है । पर, आपको उपन्यासकार के रुप में विशेष ख्याति मिली इस है । वैविध्यपूर्ण लेखन से अब तक आपको जो प्राप्त हुआ है क्या आप इसे पर्याप्त मानते हैं ?
   - ➢ मेरा अधिकतर लेखन व्यवस्था के विरुद्ध जाता है, ऐसी स्थिति में मुझे जो मिल सका है, उससे अधिक की आशा इस व्यवस्था में रखनी भी नहीं चाहिए ।
4. क्या पाठक आपकी रचनाओं के सम्बन्ध में अपनी प्रतिक्रियाएँ आपके पास भेजते हैं ?
   - ➢ हाँ, पाठकों के पत्र मेरे पास अक्सर आया करते हैं और उन पत्रों से मुझे बडा बल मिलता है, फलत: मैं अपने पाठकों को उत्तर अवश्य देता हूँ । सच तो यह है कि कोई भी लेखक प्रथमत: पाठकों के लिए ही लिखता है, अतएवं यदि पाठकों की प्रतिक्रिया लेखक तक पहुँचे तो लेखक को यह मानने का हक है कि उसका लेखन निष्प्रभावी एवं निरर्थक नहीं है ।

5. आप एक साहित्यकार भी हैं और प्राध्यापक भी थे। मूलत: आप अपने को क्या मानना चाहेंगे ?

   ➢ इस सम्बन्ध में मेरा कोई विशेष आग्रह नहीं है। लोग जो चाहें मानें। इससे न तो मेरा लेखन कभी प्रभावित हुआ है और न अध्यापन। एक स्तर पर लेखन और अध्यापन दोनों में मुझे कोई अन्तर नहीं दिखाई देता, क्योंकि दोनों ही कुछ-न-कुछ रचते हैं।

6. क्या आप भाग्य पर विश्वास करते हैं ?

   ➢ नहीं ! मैं भाग्य, भगवान पर विश्वास नहीं करता। मैं श्रम, त्याग, ईमानदारी को महत्त्व देता हूँ। अच्छी दिशा और जिद हो तो कुछ भी कार्य कठिन नहीं है।

7. आप अपनी कामयाबी का सच्चा हकदार किसे मानते हैं ?

   ➢ मैं अपनी कामयाबी का सच्चा हकदार मेहनत, मित्र और पत्नी को मानता हूँ।

8. आपको कितनी भाषाओं का ज्ञान है ?

   ➢ मुझे हिंदी अंग्रेजी दो भाषाओं का ही ज्ञान है एवं मैं उसी का उपयोग अभिव्यक्ति के लिए करता हूँ।

9. आपकी छोटी बेटी भी शिक्षा क्षेत्र से जुडी है। क्या वे भी साहित्य लिखती हैं ?

   ➢ नहीं ! उसे हिंदी साहित्य में रुचि नहीं है। वह ज्यादातर अंग्रेजी और मराठी ही बोलती है।

10. 'गुरुकुल' और 'शिखर पुरुष' उपन्यासों के शीर्षक के बारे में आपके विचार क्या हैं ?

    ➢ 'गुरुकुल' का अर्थ मैंने 'गुरुओं' का अर्थात आज के अध्यापकों के परिवार (कुल) से लिया है। शिक्षकों का यह परिवार आज अपने विद्यार्थियों में चेतना जगाने के स्थान पर, अपने स्वार्थों में लिप्त होकर बहुत घटिया किस्म के जोड-तोड में लिप्त है। शिक्षकों के इस चिंत्य परिवार की असलियत का उद्घाटन करना ही इसका उद्देश्य रहा है। 'गुरुकुल ' से जुडी हुई कथा 'शिखर पुरुष' की है। शिक्षा क्षेत्र के ये 'शिखर पुरुष' अपने व्यवहार में कितने गर्हित हैं, इसका उद्घाटन ही इस उपन्यास का उद्देश्य और कथ्य है। ये दोनों उपन्यास मेरे अपने अनुभव पर आधारित हैं। इनको लिखकर मैंने यह कहना चाहा है कि कुछ अध्ययनविरोधी तत्त्वों ने शिक्षा के क्षेत्र में प्रवेश करके इसे आज के दिन कितना गँदला बना दिया है।

11. आपने अपने 'गुरुकुल' और 'शिखर पुरुष' उपन्यास में शिक्षा-व्यवस्था में व्याप्त भ्रष्टाचार, विसंगतियों, विद्रुपताओं तथा विडम्बनाओं को जिस प्रकार बेनकाब किया है, क्या आपको ऐसा नहीं लगता कि इसकी वजह से आपका अहित भी हो सकता है ? आप ऐसा जोखिम भरा लेखन क्यों करते हैं ?

➢ अपने अहित की चिन्ता उन्हें सताती है, जो कुछ पाने की इच्छा से कलम चलाते हैं। मैंने इस महारोग से अपने लेखन को बचाया है और बचाता भी रहूँगा।

12. आप बीति होने के बावजूद भी आपने डॉ. शीतांशु को आधार क्यों बनाया ?

➢ डॉ. शीतांशु को आधार बनाने का उद्देश्य यह है कि यह कथा और व्यथा किसी एक व्यक्ति की निजी व्यथा न होकर सार्वजनिक हो जाए। इसके साथ अन्य अध्यापकों की दृष्टि वहाँ जाए जो इन समस्याओं से ग्रसित हैं।

13. आपके विरोधकों ने इन उपन्यासों को पढा तब उनकी क्या प्रतिक्रिया रही ?

➢ इन उपन्यासों के माध्यम से उनके सामने मैंने सिर्फ आईना रखने का कार्य किया है जिसमें वे अपनी सूरत देख सकते हैं। फिर भी प्रतिक्रिया चाहती हो तो उनसे जाकर पूछ सकती हो, खाली हाथ नहीं लौटोगी।

14. 'गुरुकुल' उपन्यास में शोध-छात्र (थापा) द्वारा शोध-निर्देशक (डॉ. ओछेलाल) की टाँगे तुडवाना तथा अध्यापकों के प्रति हीन शब्दों का प्रयोग करना कहाँ तक उचित है ?

➢ यहाँ उचित-अनुचित का प्रश्न ही नहीं है। ऐसे अध्यापकों की टाँगे तो तोडी ही जानी चाहिए। पहाडी विश्वविद्यालयों में ऐसे अध्यापकों को जान से मारने की घटनाएँ भी अखबारों में छपती हैं। रही बात हीन भाषा की। वे इस भाषा के लायक ही हैं। क्योंकि इन अध्यापकों के कार्य-व्यापार ही उसी प्रकार के हैं। अंधे को अंधा ही कहना चाहिए उसे सूरदास कहना मैं उचित नहीं समझता।

15. डॉ. शीतांशु, ओछेलाल के खिलाफ कोर्ट में जाने के लिए डरते हैं। क्योंकि उनका नाम 'ब्लॅक लिस्ट' में जाएगा। क्या यह डॉ. शीतांशु की कमजोरी नहीं है ?

➢ नहीं ! वे अपने नाम से डरनेवाले व्यक्ति नहीं हैं। यह सुझाव उनकी सहयोगिनी और मित्रों ने दिया था।

16. वर्तमान शिक्षा-व्यवस्था के बारे में आपकी राय क्या है ?

➢ आज समूची शिक्षा-व्यवस्था राजनीति की शिकार बन रही है। जातिवाद और वर्गवाद के साथ इसमें व्यावसायिकता दिखाई दे रही है। भ्रष्टाचार और दुराचार बडे पैमाने पर फैल रहा है।

17. संप्रति आप क्या कर रहे हैं और भविष्य में आपकी क्या संकल्पनाएँ हैं ?

➢ "आंतरानुशासन् के संदर्भ में हिंदी साहित्य इतिहासों का समाजशास्त्रीय अध्ययन" इस विषय पर लेखन कार्य पूरा हो चुका हैं। मेरे दो नये उपन्यास प्रकाशित हो रहे हैं जिनके शीर्षक हैं, 'जंगल के जुगनु' और 'कातरबेला' 'जंगल के जुगनु' उपन्यास महिलाओं से संबंधित है तथा 'कातरबेला' उपन्यास एक प्रेमकथा है। मैं लेखन कार्य गहराई में उतर कर करता हूँ। इसी कारण मुझे नई कृति निर्माण के लिए समय अधिक लगता है। मुझे डी.लिट्. के लिए दस साल का समय लगा। अभी दस साल तक लिख सकूं इतनी सामग्री मेरे दिमाग में है।

देवेश ठाकुर के 'गुरुकुल' तथा 'शिखर पुरुष' उपन्यास का परिचयात्मक अध्ययन।